International Referred Research Journal ISSN-0974-2832 VOL. II * ISSUE—15 April, 2010

शोधपत्र-हिन्दी

उत्तर आधुनिकता वाया अंधा युग

* डॉ. रेखा वर्मा

* विभागाध्यक्ष हिन्दी विभाग, जी. एस. एस. (पी.जी.) कॉलेज,चिड़ावा

April, 2010

जब एक परिवार के दायाद भाईयों के लिए महाभारत हुआ। अब भूमंडलीकरण के दौर में, वैश्वीकरण गांव में परिवर्तित हो चुका है। पूंजीवादी विचारधारा की शक्ति एवं पूंजीपति की वर्चस्वता प्रत्येक श्रमशील व्यक्ति एवं गरीब अशक्त देश को ज्ञात हो चुकी है। पूंजीवादी रूझान मानवीय संवेदनाओं को समाप्त करता है। घोटालों के रूप से इनकी कहानी से सभी अचम्भित रहते हैं। ऐसी स्थिति में प्राकृतिक आपदा भूस्खलन, सूखा, जल संकट, भूंकप आदि के समय मानवीय संवेदनायें तिरोहित हो जाती हैं। हैती का भूंकप यही कहानी कहता है। क्या आने वाले समय में विश्वयुद्ध होगा? सन् 2012, 13 का अनुमान ऐसे ही किसी प्राकृतिक आपदा की समाप्ति के बाद युद्ध की परिणति में लगाया जा रहा है।

मानवीय संवेदनाओं रहित जिस पूंजीवाद का अस्तित्व टिकेगा। वहां साधारण मनुष्य कैसे जीवित रह सकता है। अंधों के युग में शोषण, उत्पीड़न, विषमता के रूप बदल चुके हैं। यह इतिहास का ही सबक है, सांप भी मर जाये लाठी भी ना टूटे। बिना युद्ध के सूई की नोंक बराबर भूमि का समय नहीं, बल्कि बिना युद्ध किये, तू बचेगा, तो लेगा, तू बचेगा ही नहीं तो लेगा कैसे। अथवा बिना रीढ़ के तू खड़ा कैसे रहेगा। आज आधार पर ही प्रहार है। यह प्रवृतियां मानव/विज्ञान की पराकष्ठा है, अथवा भारतीय प्रवृतियों का विकास? डॉ0 धर्मवीर भारती कृत नाट्य कृति 'अधां युग' महाभारत के अंतिम दिन की, युद्ध के पश्चात् बची, मानसिक संत्रासना की त्रासदी है। यह गांधारी, धृतराष्ट्र, संजय, युयुत्सु, अश्वत्थामा, और कृत वर्मा के यथार्थवादी अनुभव में होने और ना होने की अवस्था में हिचकोले खाती है। क्योंकि सभी पात्र मानवीय हैं, अतः मानवीय दुर्बलाताएं यहां स्पष्ट परिलक्षित हैं हां, साधारण से असाधारण का अहंकार अवश्य चरमोत्कर्ष पर पहुंचा हुआ है। कुछेक क्षण शक्ति भरा दंभ, उसके पश्चात असफलता का विदुप नाटक सभी पात्र एक दूसरे से असन्तुष्ट विवश तथा टूटे हुए। जो सत्ताधारी हैं, वह आस्थाहीन, जो अशक्त निष्ठावान प्रहरी है, वह उपेक्षित। जैसे सामाजिक विचारधारा का आधार मात्र राजनैतिक ही हो। अथवा मात्र राजनैतिक विचारधारा ही, सांस्कृतिक, सामाजिक आर्थिक अवधारणाओं को निर्मित करती हो। अथवा राजनीति का समाज पर, समाज का राजनैतिक प्रभाव एक दूसरे से गुंथा हुआ हो। अभी तक दूसरों का दायित्व कृष्ण ने अपने ऊपर लिया था लेकिन गांधारी का शाप उनके ग्रहण कर अस्तित्व का एक अंश निष्क्रियता हिंसा, आत्मघात रूप स्वयं धारण कर लिया और दूसरा अंश मानववादी मूल्यों पर जीवित रहेगा। इस स्थिति के बिन्दू पर छोटे से छोटा मनुष्य भी कर्मशील बनकर जीवन की सार्थकता खोजेगा। यही स्वतंत्र सृजनात्मकता 'अंधों के माध यम से ज्योति' लाने की है। इन्हीं प्राण तत्वों के कारण मनुजता युद्ध संस्कृति और आत्मघाती मनोवृति से ऊपर उठती रहेगी। उत्तर आधुनिकता विकल्पों का युग। तू नहीं तो और। ओर यह नहीं तो और। एक ओर प्रवृति तटस्थता को प्रकट करती है, दूसरी ओर शाश्वतता का प्रमाण भी है। शाश्वत जो है, किन्तु एक रूप के द्वारा नहीं बदलते, वैकल्पिक रूप में विद्यमान है।

दो वर्चस्व। एक सत्ताधारी दूसरा पुरूषधारी। सत्ताधारी पद के अभिमान एवं शक्ति बल पर, अपनी प्रतिकूलता को दण्ड दिया करता है, और पुरूष, युगों से प्राप्त सत्ता और अधिकार के बल पर दंडित कर 'न्याय' करने की कृपा करता है। इन वर्चस्व धारियों ने अपने अधीनस्थ के समक्ष जो आरोप लगाये हैं, उन्हें गुलामों की तरह शिरोधार्य कर लेना चाहिये, नहीं तो सजाये मौत तैयार है ही। भूमंडलीकरण की विचारधारा नव साम्राज्यवादी विचारधारा बना रही है। इसमें एक राज्य और राजा की कहानी नहीं है, यहां विकासशील और तीसरी दुनिया

के विकसित देशों के बीच अधिकार और अधिकारों का संघर्ष बन रहा है। 'महाभारत' कौरव–पांडव की गाथा और उत्तर–आधुनिकता, विकसित और विकासशील मानदंडों में श्रेष्ठ–अश्रेष्ठता की दौड़। महाभारत युद्ध में लड़कर जीवन की समाप्ति, उत्तर आधुनिक युग में विचारों की समाप्ति। विचार समाप्ति पर आदमी तो क्या कौम ही अपने आप मर जाती है। अब इन देशों ने धृतराष्ट्र की नीति अपना ली है। आतंक वाद, पर्यावरण प्रदूषण बढती निर्धनता, जैसी ज्वलंत समस्याओं से दृष्टि फेर ली है। अपने ऊपर आक्रमण है बदले की कार्यवाही। तीसरी दुनिया से संयम से काम लेने की मीठी टाफी। जब विश्व वैश्वीकरण मय हो चुका है तो पूंजीवादी विकासशील देश अपने को अलग क्यों मानते है? समस्त विश्व एक मिलकर कार्य क्यों नहीं करते? विकासशील देश अपने राष्ट्रीय हितों और संप्रभुता पर आंज तक नहीं आने देते। लेकिन कमजोर देशों की स्वंतत्रता रहे ना रहे, कोई गम नहीं। हमारे निर्यात के लिए रास्ते बन्द हैं, अपना मुनाफा बढ़ाने के लिए उनके पास चारों ओर के दबाव हैं।

नेतृत्व और पूंजीवादी अभिलाषा प्रभुत्व और संप्रभुता का कारण है। इसके लिए ही युद्ध अथवा शीत युद्ध अथवा स्पर्धा विकसित होती है। यह स्पर्धा अंध रूप से ही संभव है। जागृत रूप में तो आपकी संचेतना कार्यरत रहेगी जो इस स्पर्धा से दूर रखेगी। धृतराष्ट्र की कसक, मेरे पुत्र पीछे क्यों रहें? समान रहते हुए भी सर्वत्र युधिष्ठिर अर्जुन की जयकार क्यों हो? अतः पुत्रों की सर्वत्र जयकार के लिए पांडवों का विनाश ही उचित है। राज्य का विभाजन इसका समाधान नहीं है। वस्तुतः विभाजन के बाद भी पांडवो का वर्चस्व और जयकारा तो ज्यों–का–त्यों बना ही रहेगा। वर्चस्ववादिता की चिन्ता विकासशील देशों को ही नहीं वरन् विकसित और समृद्धशील कहलाने वाले देशों को भी है। वर्चस्व की प्रतिस्पध र्ा के परिणाम स्वरूप इराक में घटित भूतपूर्व राष्ट्रपति जार्ज बुश पर फेंका गया जूता था। यह एक नागरिक की वह मनोग्रन्थि थी, जो देश के तबाह हुए रूप से उपजी थी। उत्तर–आधुनिकता में उपजे ज्वलंत प्रश्न–सामाजिक न्याय, आशा के स्त्रोतों की तलाश, विकल्प की अवधारणा जीवन की गुणवत्ता, सृजनशीलता यूटोपिया की आवश्यकता, नयेपन की अवधारणा, श्रम का भूमण्डलीकरण स्त्री आंदोलन, दलित आन्दोलन, और परिवार की अवधारणा हैं। यही प्रश्न और अस्तित्व की अवधारणा महाभारत का कारण थी। माता गांधारी के शब्दों में भारती जी ने कहाः–

''धर्म, नीति, मर्यादा, यह सब हैं केवल आडम्बर मात्र/मैंने यह बार–बार देखा था/निर्णय के क्षण में विवेक और मर्यादा/व्यर्थ सिद्ध होते आये हैं सदा/हम सब के मन में कहीं एक अन्धगह्वर है। बर्बर पशु, अन्धा पशुवास वहीं करता है।''

'पर्सनल इज पॉलिटिकल' की अवधारणा ही अंधों की जन्मदात्री है। विश्व में समाज के सत्तर–अस्सी प्रतिशत लोग वर्तमान व्यवस्था से त्रस्त हैं, बदलाव चाहते हैं, किन्तु शक्तिहीन हैं, यदि समाजवाद के प्रभावी स्वरूप की चर्चा करें तो यह जनता के जागरूकता के कारण ही सम्भव है। जनता की जागरूकता शिक्षा के साथ आत्म विश्वास से उपजती है। 'लोग क्या कहेंगे' की मानसिकता रूढ़िवादी विकृत मानसिकता ही उत्पन्न करती है। जहां शिक्षा की डिग्री तो है विचारधारा का परिवर्तन नहीं। यह समस्या भारत के गांवों–कस्बों की प्रमुख समस्या है। देश की चर्चित महान स्त्रियों को परिवार से प्लेटफार्म मिला था। उन्हें अपने व्यक्तित्व को वैश्वी आकार देने में संघर्ष नहीं करना पड़ा। जहां ऐसे महान चरित्र स्त्री जनसंख्या में कुल एक प्रतिशत भी नहीं बैठेते, वहां स्त्री सशक्तिकरण और स्त्री–विमर्श शत–प्रतिशत कैसे सफलता प्राप्त कर सकते हैं? उत्तर–आधुनिक वाया अंधायुग की विशेषता है यहां अंतर्विरोधों को मौजूदगी भी अपनी उपस्थिति का एहसास नहीं होने देती। स्त्रियों की दयनीय अवस्था को खोलती मृणाल पाण्डे की 'ओ उब्बीरी' इन्हीं दास्तान का दस्तावेज है।

उत्तर–आधुनिकतावाद में साम्राज्यवाद और पूंजीवाद का गठजोड़ बना है। यह राष्ट्र प्रत्येक क्षेत्र में, यहां तक कि जीवन के नितांत निजी क्षेत्र में घुसपैठ कर, चेतन–अचेतन मन में उत्पाती का कार्य कर रहे हैं। इस मनोवृति से नौकरशाही और अंध भक्ति पनपने की प्रवृति अधिक बलवती जान पड़ती है। तर्क, विवेक, मूल्य, सिद्धान्त, आदर्श और स्वप्न यह ऐतिहासिक महाभारत का स्वरूप है, यह कब की चुक गयी श्रद्धा है, अब तो शक्ति ही निर्णायेक है। पूंजीवाद का उद्देश्य ना तो गरीबी और बेरोजगारी को कम करना है, ना लोगों की बुनियादी आवश्यकताओं की पूर्ति है। बुनियादी आवश्यकताओं के लिए लोगों का संघर्ष दिन–प्रति–दिन बढ़ रहा है। क्या ऐसी ही किसी आवश्कताओं की पूर्ति के लिए नक्सलवाद जन्म ले रहा है? जिसके पास कोई मानवीय मूल्य नही है। सिवाये क्षत–विक्षत हिंसा के। वही अंध–नियति की विडम्बना–शक्तिशाली चाहे देशी हो या विदेशी, शक्ति हीन को दबायेगा ही, यथासंभव उसका शोषण करेगा। कोई शक्तिहीन व्यक्ति या देश इस व्यवस्था को स्वीकार नहीं करेगा तो शक्तिशाली उसे नष्ट कर देंगे।–

(भीम ने कृष्ण के संकेत पर गदा युद्ध में दुर्योधन पर आघात किया) यह सूचना है सभी के शक्तिशाली बनने के लिए। जो सभी शक्ति प्राप्ति में बोल सकें। यदि इसमें शोषण, अन्याय, दमन और उत्पीड़न होता है तो हो हाशिए से केन्द्र में पहुंचने का यही मात्र उपाय है। यदि धर्मवीर भारती के आत्मसत्य का अनुभव करें तो कुण्ठा, निराशा रक्तपात, प्रतिशोध, विकृति, कुरूपता, अंधापन इनसे हिचकना क्या? यह ना हो तो सत्य की अभिव्यक्ति कैसे प्रकट हो। इनका अन्तर कैसे पता चले। यही तत्व तो सत्य के सुनहरे रूप की कसौटी है। हां आज सत्य रूपी कसौटी का आकार सिकुड़ गया है।

प्रतिशोध, विकृति, कुरूपता, अंधापन महाभारत में ही नहीं आज भी सर्वत्र व्याप्त है। सोचने की दिशा यह भी है। जब एक अंध रूप के कारण 'महाभारत' हुआ जहां सभी धृतराष्ट्र की भूमिका में हो तो उसका नाम विश्व युद्ध, महाविश्व अथवा विश्व–समर हो? अथवा कृष्ण और भीम की मिली–जुली आस्था–अनास्था ने विश्व को इस मोड़ पर ला खड़ा कर दिया है। प्रभु या परात्पर तुम्हारें द्वारा छोड़ी गई अनास्था अब जन–जन की आस्था में परिणत हो चुकी है। हां, यह दूसरी बात है, कि – हरेक के पीप–मवाद के भोक्ता स्वयं कृ ण बन जाते हैं। कहीं कोई अन्तर जो नहीं। धर्मवीर भारती प्रारम्भ ही ऐसे करते हैं, युद्धोपरान्त यह अंधा युग अवतरित हुआ। अर्थात् शीत युद्ध के पश्चात् उपजी अनास्था बरक्स उत्तर आधुनिकता। युद्ध के अवशेष यही संदेश देते हैं, जो कुछ सुन्दर था, शुभ था कोमलतम था वह हार गया यह युगान्तकारी नाटककार की अभिव्यक्ति है अथवा युद्ध के बचे अवशेष उत्तर आधुनिकता में फेयर एण्ड लवली की सुन्दरता लाइफ बॉय की शुभता और लक्स की कोमलता को छोड़कर शेष नदारद है।

'अंधा युग' के प्रहरी की भूमिका में ही मध्य और निम्न वर्ग प्रस्तुत है। जो कहीं किसी युद्ध में हिस्सेदार नहीं बनते, फिर भी पीड़ा को भोगने के लिए अभिशप्त हैं। यहां प्रहरीय मानसिकता के भुलावे रहते हैं रक्षक थे हम किन्तु रक्षणीय कुछ भी नहीं है। 'जिनके अंधेपन में मर्यादा गलित अंग वेश्या–सी प्रजाजनों को भी रोगी बनाती फिरी।' लाभ और मुनाफा अथवा अग्र पंक्ति में आने की स्पर्धा से उपजी अंध–श्रद्धा आस्था क्या वास्तविकता में परिवर्तनीय फलक है अथवा शक्ति के समक्ष आत्मसमर्पण, जिससे प्रजाजनों में संत्रस्ता आ रही है। 'अंधा–युग' जहां अपने से परे, घोषणाएं है, मर्यादा मत तोड़ो, तोड़ी हुई मर्यादा कुचले हुए अजगर सी गुंजलिका में कौरव–वंश को लपेट कर सूखी लकड़ी सा तोड़ डालेगी। ' उत्तर आधुनिकता में कौरव वंशज ही नहीं, पांडवों के वंशज भी नई मर्यादाओं के सृजनकर्ता है। उन्होंने पूर्वजों से सीख लिया भावनायें कुछ नही होती, मर्यादाओं को अग्र पंक्ति में रहकर जैसा निर्मित करोगे, पीछे से वहीं, चाहे कुछ ही समय के लिए अनुकरणीय बन कर सामने आयेगा। बाद का, सूखी–लकड़ी सा टूट कर बिखरना क्यों अखरेगा। यह बाद की आत्मस्वीकृति है, ''मैंने अपने ही वैयक्तिक संवेदन से जो जाना था केवल उतना ही था मेरे लिए वस्तु–जगत''। अंधा युग की वेदना दृष्टि समापन उत्तर आधुनिकता की उपलब्धि, दृष्टि एवं वाणी की वाचलता। जो कभी उपस्थित कभी अनुपस्थित। ना जाने इस दृष्टि की रूप काया कैसे मायाजाल में परिवर्तित हुई कि कोई गोपनीयता को सीसी कैमरे में 'तहलका' मचाता है, कोई जग जाहिर को गोपनीय बना देता है। क्या गांधारी का कथ्य उत्तर आधुनिक परिप्रेक्ष्य में सही नहीं है 'धर्म नीति मर्यादा यह सब है केवल आडम्बर मात्र ....निर्णय के क्षण में विवेक और मर्यादा व्यर्थ सिद्ध होते आये है / सदा।'

धर्म गुरूओं का धर्म, शीत युद्ध के बाद नीति और प्रतिस्पर्धा में मर्यादा आडम्बर नहीं है? क्या भारती जी ने उत्तर आधुनिक स्वरूप को 'अंधा–युग' में ही प्रकट कर दिया। अथवा यह विकास कुरूक्षेत्र से निकल कर वैश्वीकरण तक पहुंच गया है। देखों यदुवंशी, तुम्हारे समाप्त करने के पश्चात् भी वंशीय प्रवृति कहां से कहां पहुंच चुकी है। अथवा याचक की सार्थक यथार्थ वाणी, 'जब कोई भी मनु य अनासक्त होकर चुनौती देता है इतिहास को, उस दिन नक्षत्रों की दिशा बदल जाती है।' वृद्ध याचक की वेदना अथवा मनुष्य के कर्मों द्वारा भविष्य का निश्चित होना ही सत्य बनकर उभरता है।

'मानव जो करता है, इसी समय उसी में निहित है भविष्य युग युग तक का।' अश्वत्थामा को बर्बरता, अर्धसत्य ने प्रदान की। अर्धसत्य की निकली प्रथा ने अनेक अश्वत्थामा को जन्म दे दिया है, जो चुपचाप नहीं बैठते बल्कि हिंसा करके अपने संगठन की घोषणा करते हैं, हां आंतककारी घटना को अंजमा हमने दिया है, करते रहेंगें। जिनका धर्म, केवल वध, केवल वध, कवेल वध मात्र ही बचा है। अश्वत्थामा की आत्मस्वीकृति वध मेरे लिए नहीं नीति है। वह है अब मनोग्रन्थि। जिव्हा हीन गूंगा कहलाता है। नहीं उतर आधुनिकता में गूंगा बनकर गुजर करनी होती है। व्यंग्य की पराका ठा, अन्दर की विकलांगता का असहाय रूप ही गूंगापन है। युयुत्सु और अवश्त्थामा के अर्ध सत्य की विडम्बना जिन्हें किरचों में बिखेर देती है। उसे बिदुर अपनी नीति से समझने समझाने का प्रयास

करते है।संभवतः युग और प्रवृतियों का विकास किसी भी परिप्रेक्ष्य में हो, सतय के लिए अथवा अस्तत्य के लिए अंतिम परिणति में दोनो जर्जर करते हैं। सत्तावान की शक्ति सत्ता में निहित है सत्तायुक्त होते ही शक्तिहीनता उपजती है। यही शक्तिहीनता द्वेष, हिंसा जर्जरता की जन्मदात्री है। इसे उत्तर आधुनिकता ने भली–भांति समझ लिया है। इसीलिए इसका धर्म, कर्म केवल वर्तमान है। इसे शक्ति सामर्थ्य से सम्पन्न करो शेष कुछ भी नहीं। जो कृष्ण का पक्ष और कृष्ण की आस्था को लेकर चलेगा वह युयुत्सु के समान, इस संसार की दृष्टि में, वधिक वंचक सब की घृणा का पात्र बनेगा। यही वंचकता वंचितता घृणा सभी को अपनी धुरी से उतार कर रख देती है। दुनिया की सारी मर्यादा बुद्धि केवल निपट शक्तिहीन अनाथ अकेले के कंधों पर थोपी जाती है। इन्हीं बोझ से कभी ना कभी प्रतिशोध की ध्वनि निकलती ही है।

मृत वृद्ध याचक की भवि यवाणी केवल द्वापर युगीन नहीं लगती वह वर्तमान जैसी वाणी लगती है। युग की प्रवृति अंधे समुद्र के समान, जिसे पहाड़ों ने चारों ओर से घेर लिया है। समुद्री तूफान उसे मथने का कार्य करते है। इसमें बहाव का मन्थन, गति है, यह नदी जैसा सीधा सरल नहीं, बल्कि नाग लोक की प्रकाशरहित गहरी रिक्तता है। जहां सैकड़ों केंचुल चढ़े अंधे सांप एक दूसरे से लिपटे हुए आगे–पीछे ऊपर–नीचे, टेढ़े–मेढ़े रेंग रहे हों, उसी भांति सैंकड़ों धाराएं इन सांपों की तरह बिल बिला रही हैं।

'ऐसा है यह अंधा समुद्र जिसे हम आज का भव प्रवाह कह सकते है। और कुछ सफेद केंचुल ऊपर तैर आये हैं। सफेद पट्टियों की तरह ये पट्टिया गांधारी की आंखों पर हैं। सैनिकों के जख्मों पर है।' संजय की दिव्य–दृष्टि अंधों को सत्य दिखाने से समाप्त हो गयी। सबका अपना–अपना सत्य। इस सत्य के पक्षधर इस सत्य के रख–रखाव में यूं ही मिटते–सिमटते चले जाते हैं जिन्होनें इनका आस्वाद ले लिया है, वह कमतर से संतुष्ट नहीं होते। यह संघर्ष अनवरत अपने–अपने सत्य के स्थापना–विस्थापन से चला चलता है। सत्य के इस अंधेपन से उत्पन्न परिधि भी अंधी ही होती है। अंध ाता के फलस्वरूप उपजाता है नरपशु। वैसा ही जैसा अश्वत्थामा ने उतरा के गर्भ पर ब्रह्मास्त्र का प्रयोग किया। जिसकी ज्वाला सदियों तक वनस्पति से वंचित, शिशुओं को विकलांगता, कुण्ठाग्रस्त, बौनी मनु य जाति को जन्म देती है। अणु–परमाणु की ज्वाला वनस्पति विहीनता और अपंगता धरा को बंजर कर देती है। हे, हिरोशिमा, नागासाकी अपनी वेदना का बखान तुम इस बहरे संसार को चीख–चीख कर सुनाओं। मानव निर्मित और अंधता का प्रतिफल क्या है? सत्यम, सुन्दरम, कोमलतम् को पपड़ी जमे खुरंट के समान खरोंच–खरोंच कर निकालना। लॉबी और ब्रीफिंग ! पहले सत्य का विश्वास दिलाकर युयुत्सु को अपनी ओर आने के लिए मनोवैज्ञानिक दबाव डालना विजयोपरान्त उन्हीं में से एक भीम द्वारा कटूक्तियों से अपमान करना। सत्ता प्राप्ति के बाद नये मापदण्डों से नियन्त्र करना। अथवा सत्ता और जनता का खेल ही निराला है। शासक कठोर, तो त्रस्त, शासक संत–योगी तब भी त्रस्त। यही कटु भोगा हुआ सत्य प्रहरी व्यक्त करते हैं, 'नाम उन्हें चाहे हम युद्ध दें या शान्ति जानते नहीं ये प्रकृति प्रजाओं की।' मूढ़ दुर्विनीत अंहकार ग्रस्त मानवता से जीवन अभिशप्त होने लगता है। युयुत्सु भी अभिशिप्त जीवन लिए अपमान से त्रस्त आत्म हत्या पर विवश होता है। जिसे धर्मवीर भारती कहते हैं, 'यह आत्महत्या होगी प्रतिध्वनित इसी पूरी संस्कृति में, दर्शन में, धर्म में कलाओं में शासन–व्यवस्था में, आत्मघात होगा बस अंतिम लक्ष्य मानव का।' फिलहाल प्राप्त आंकड़ों के अनुसार भारतीय युवा आत्महत्या में अग्रणी हैं। कुछेक को आंतकवादी अपना निशाना बनाये हुए हैं स्थिति नियन्त्रण में है।

फिर भी शक्ति सम्पन्नता को ये दिल मांगे मोर। विदुर संयम से युधिष्ठिर को समझाते हुए कहते हैं। 'शिखरों की ऊंचाई/कर्म की नीचता का/ परिहार नहीं करती हैं।' भारती जी का प्रखर व्यंग्य या परम अभिव्यक्ति अंधे का शासन हो अथवा विडम्बना, अंहकार, प्रतिस्पर्धा, अपना अपना सत्य लिए संस्कृति हो, अपनी सम्पन्नता को चरम विकास मानता अंधायुग हो, यह भविष्य रूपी शिशु हर बार अश्वत्थामा के ब्राह्मास्त्र से मारा जायेगा। इसे ही हम उत्तर आधुनिकता की संज्ञा देते है। बाद की अश्वत्थामा की स्वीकारोक्ति मैं हूं अमानुशिक अर्धसत्य/तर्क जिसका है घृणा और स्तर पशुओं का है।' वर्चस्वता का अधिकार क्या मानव को पशु में बदल देता है। तर्क ज्ञानी विज्ञानी उसे विकास कहते है। नहीं नहीं नेत्रहीन धृतराष्ट की संतान ने पशुवत् व्यवहार खुलकर प्रकट किया। अंधों के युग में हमें पशुवत् व्यवहार खुलकर प्रकट करना सख्त मना है। देखों उत्तर आधुनिकता में हम कितने विकसित और सभ्य है।